इकाई-3

फ्रांस की क्रांति

सन् 1789 की फ्रांस की क्रांति यूरोप के इतिहास में एक युगान्तकारी घटना थी, जिसने एक युग का अन्त और दूसरे युग के आगमन का मार्ग प्रशस्त किया। इस क्रांति ने फ्रांस में राजतंत्र को समाप्त कर सामाजिक व्यवस्था के नये विचारों-'स्वतंत्रता', 'समानता' एवं 'बन्धुत्व', तथा मानव अधिकार के नये सिद्धान्तों-'आदमी स्वतंत्र पैदा होता है', को प्रतिष्ठापित किया और यूरोप की पुरानी रीतियों तथा संस्थाओं को चुनौती दी। इस तरह के विचार-स्वातंत्र्य का प्रादुर्भाव यूरोप में पुनर्जागरण के परिणाम स्वरूप हुआ था, जिसने यूरोप में कई राष्ट्रवादी क्रांतियों को जन्म दिया। ये क्रांतियाँ सामन्तवादी एवं निरंकुश शासन व्यवस्था तथा शोषण करने वाली सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ थीं। इसी क्रम में सन् 1776 ई० में शुरू हुआ अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम और सन् 1783 ई० में ब्रिटेन के विरुद्ध उसके उपनिवेशों की स्वाधीनता ने फ्रांस की पुरातन व्यवस्था को समाप्त कर स्वतंत्र विचार वाले समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। चूँकि फ्रांस ने इस युद्ध में ब्रिटेन के खिलाफ अमेरीका की मदद की थी, अत: अमेरीका के बाद स्वतंत्रता की लहर फ्रांस में आई और इन सैनिकों ने फ्रांस में जनता का साथ दिया।

फ्रांस की क्रांति क्यों और कैसे हुई, यह समझने के लिए हमें तत्कालीन राजनीति एवं समाज का अध्ययन करना होगा। यद्यपि अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस एक शक्तिशाली राज्य था, उसने उत्तरी अमेरिका के एक विस्तृत क्षेत्र, पश्चिमी द्वीप समूह और अफ्रिका में मेडागास्कर के टापू पर अधिकार कर लिया था, फिर भी सत्ता की नींव मजबूत नहीं थी। लम्बे समय तक चले युद्धों के कारण आर्थिक संसाधनों की कमी तथा शासकों की फिजुलखर्ची ने फ्रांस की जनता पर अत्यधिक करों का बोझ डाल दिया और सामाजिक विषमताओं के उत्पीड़न ने उन्हें क्रांति के कगार पर ला दिया। अत: क्रांति के उत्तरदायी कारणों की व्याख्या निम्न तरीके से की जा सकती है।

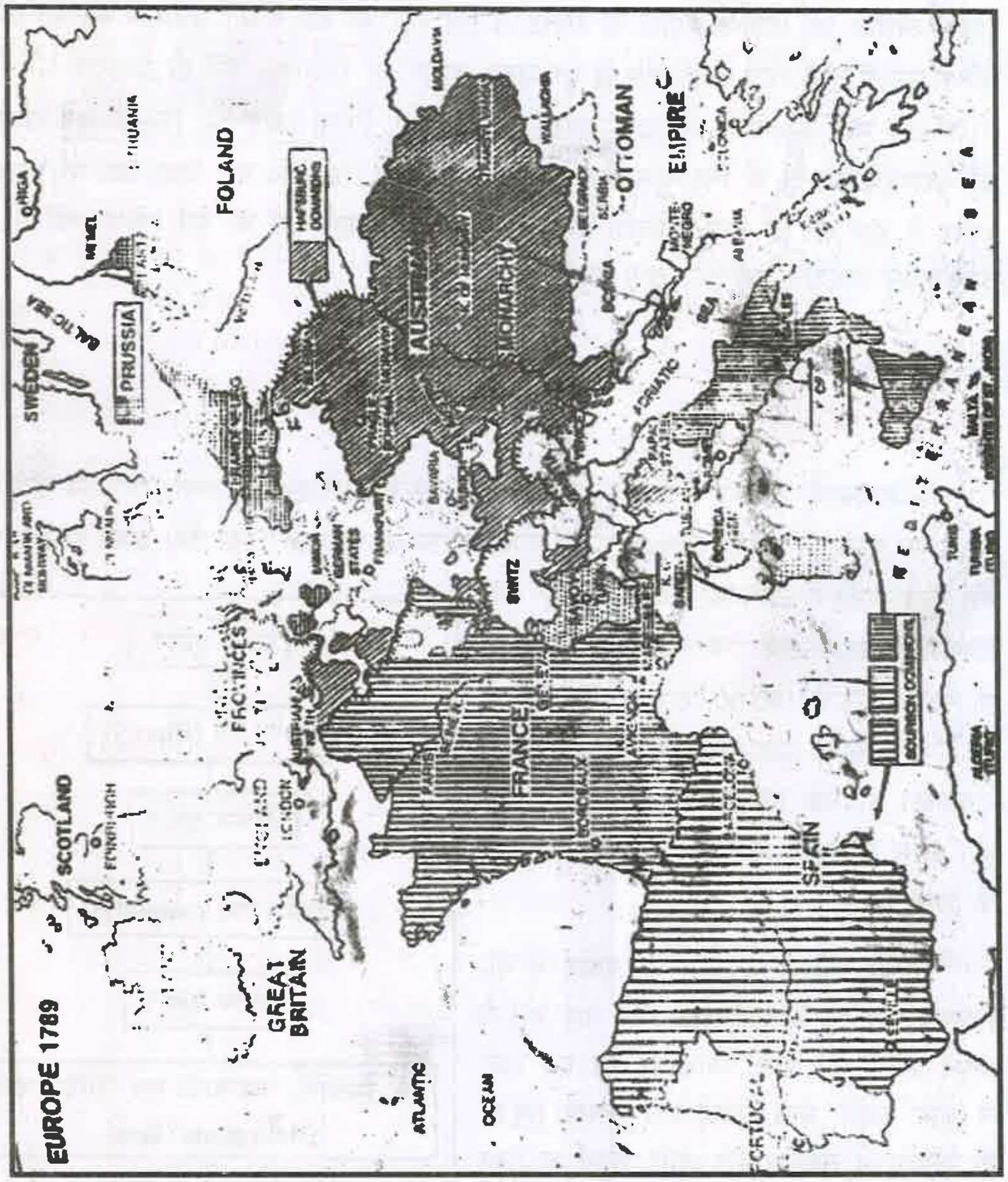
3.1 राजनैतिक कारण :

फ्रांस में राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था थी। बूर्बों राजवंश के लुई XIV के शासन काल में साम्राज्य की प्रतिष्ठा उच्च शिखर पर थी, लेकिन उसके बाद के शासक आयोग्य सिद्ध हुए। सन् 1774 ई० में लुई XVI गद्दी पर बैठा, जो अत्यधिक निरंकुश, फिजुलखर्च एवं अयोग्य था। उसका विवाह आस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी अन्तोयनेत के साथ हुआ था, जो उत्सवों में काफी रुपये लुटाती थी, और अपने खास आदमियों को ओहदे दिलाने के लिए राजकार्य में दखल देती रहती थी। राजा के वर्साय स्थित महल में पन्द्रह हजार अधिकारी ऐसे थे जो कोई भी काम नहीं करते थे, मगर अपार धनराशि वेतन के रूप में लेते थे। राजस्व का 9 प्रतिशत इन्हीं पर व्यय होता था। लुई XVI के शासन काल में अमेरीका के तेरह उपनिवेशों को ब्रिटेन से आजाद कराने में फ्रांस पर 10 अरब लिव्रे (तत्कालीन फ्रांस की मुद्रा) से भी अधिक का कर्ज बढ़ गया था। पहले से ही चली आ रही आर्थिक संसाधनों की कमी ने राजा को अपने नियमित खर्च को चलाने के लिए जनता पर करों में वृद्धि के लिए वाध्य किया।

> **राजनैतिक कारण**
> - निरंकुश एवं आयेग्य शासन
> - संसद की बैठक 175 वर्षों तक नहीं बुलाई गयी।
> - अत्वधिक केन्द्रीय कारण की नीति।
> - स्वायत्त शासन का अभाव
> - मेरी अन्तोयनेत का प्रभाव

निरंकुश राजतंत्र पर नियंत्रण का अभाव था। यद्यपि स्टेट्स जेनरल (States General) संसदीय संस्था थी, लेकिन राजा की निरंकुशता का यह एक बड़ा उदाहरण था कि सन् 1614 ई० के बाद 175 वर्षों तक इसकी कोई बैठक नहीं हुई थी। लुई XIV की निरंकुशता इस बात से पता चलता है कि वह कहा करता था कि "मैं ही राज्य हूँ" (I am the state) लेकिन चूँकि वह योग्य शासक था, विद्रोहियों को कुशलतापूर्वक दबा देता था। अतः उस समय राज्य की पूरी शक्ति उसके हाथ में निहित हो गयी थी, लेकिन उसके उत्तराधिकारियों में इस तरह के गुणों का अभाव था।

राजा की निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता पर अंकुश लगाने के लिए फ्रांस में पार्लमा नामक संस्था थी, जिसकी संख्या 17 थी और जिसका गठन न्यायालय के रूप में किया गया था। न्यायाधीशों का पद कुलीन वर्ग के लिए सुरक्षित होता था और यें पद वंश क्रमानुगत होते थे। आवश्यकता पड़ने पर राजा इन्हें पैसे के बल पर अपनी बात मनवाने के लिए वाध्य कर देते थे। इस तरह व्यवहार में इस पर भी राजा का ही नियंत्रण होता था।

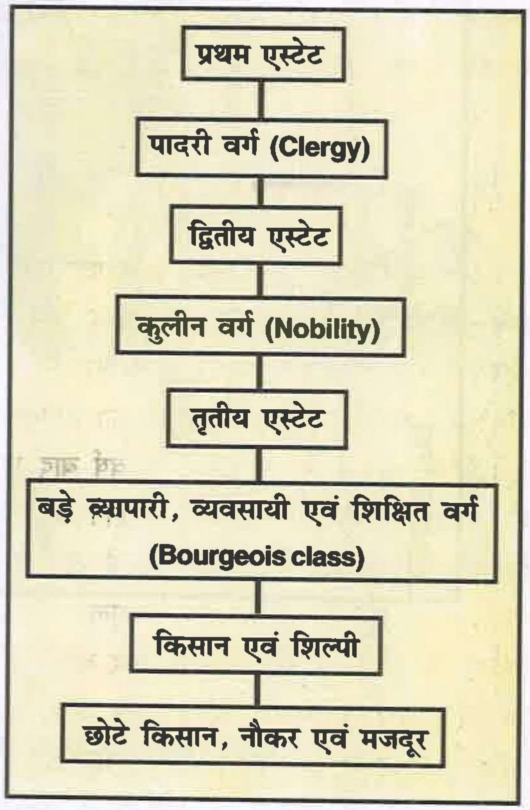


सन् 1789 ई0 फ्रांस का राजनीतिक मानचित्र

केंद्रीयकरण की प्रवृत्ति फ्रांसीसी क्रांति की सबसे बड़ी बुराई थी। स्वायत्त शासन का सर्वथा अभाव था, जबकि पड़ोस के इंग्लैंड में इस तरह के शासन का संचालन स्वायत्त शासन की संस्थाओं द्वारा होता था। फ्रांस में हर जगह वर्साय के राजमहल की ही प्रधानता थी। राजा के अलावे मेरी अन्तोयनेत के द्वारा शासन का दुरुपयोग किया जाता था, जिससे जन साधारण की धारणायें राजतंत्र के बिलकुल खिलाफ हो गयी। सन् 1789 ई० तक आते-आते जन साधारण शासन में भाग लेने के लिए उतावला होने लगे। उस समय वहाँ कोई भी ऐसी संस्था नहीं थी, जो उनकी उग्र मनोवृत्ति पर रोक लगा सके।

सामाजिक कारण :

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांसीसी समाज तीन एस्टेट्स (Estates) अर्थात् श्रेणी में बँटा हुआ था। प्रथम एस्टेट् में पादरी (Clergy) थे, जिनकी संख्या लगभग एक लाख तीस हजार (1,30,000) थी। दूसरे एस्टेट् में अभिजात वर्ग (Nobility) था, जिसमें लगभग अस्सी हजार (80,000) परिवार या चालिस लाख (40,00,000) व्यक्ति थे। ये दोनों वर्ग करों से मुक्त थे। उस समय फ्रांस की जनसंख्या लगभग ढाई करोड़ (2,50,00,000) थी। फ्रांस की कुल भूमि का 40 प्रतिशत इन्हीं के पास था।



90 प्रतिशत जनता तीसरे एस्टेट् में थी, जिनको कोई भी विशेषाधिकार प्राप्त नहीं था। ये अपने स्वामी की सेवा, स्वामी के घर एवं खेतों में काम करना, सैन्य सेवायें देना अथवा सड़कों के निर्माण में सहयोग देना आदि कार्यों के लिए वाध्य थे। उन्हें सभी प्रकार के कर देने पड़ते थे। इसी वर्ग में डाक्टर, वकील, जज, अध्यापक, व्यापारी, शिक्षक, लेखक, शिल्पी एवं मजदूर आदि शामिल थे, जो शहरी क्षेत्र में रहते थे। यह

वर्ग मध्यम वर्ग (Bourgeois) कहलाता था, जिन्होंने फ्रांस की क्रांति में अहम् भूमिका निभाई।

मध्यम वर्ग में सबसे अधिक असंतोष था, जिसका सबसे बड़ा कारण यह था कि सुयोग्य एवं सम्पन्न होते हुए भी उन्हें कुलीनों जैसा सामाजिक सम्मान प्राप्त नहीं था। सम्पन्नता और उन्नति के बावजूद भी वे सभी तरह के राजनैतिक अधिकारों से वंचित थे। राज्य में सभी बड़े पद कुलीनों के लिए सुरक्षित थे। उनका मानना था कि सामाजिक ओहदे का आधार योग्यता होना चाहिए, न कि वंश।

सामाजिक कारण :

1. मध्यम वर्ग में राजनैतिक अधिकारों के प्रति सजगता।
2. सामाजिक असमानता से असंतोष।
3. कृषकों की दयनीय स्थिति।

मध्यम वर्ग के साथ कुलीन वर्ग के लोग बहुत बुरा और असमानता का व्यवहार करते थे। यह बात उन्हें बहुत अपमानजनक लगती थी। इसी वजह से फ्रांस की क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण नारा 'समानता' था, जिसे मध्यम वर्ग ने आगाज किया।

फ्रांसीसी समाज में कृषकों की स्थिति तो और भी दयनीय थी। उन्हें अनेक प्रकार का कर देना पड़ता था। कहा जाता है कि क्रांति के पूर्व फ्रांस में कुलीन लड़ते थे, पुजारी पूजा करते थे और जन साधारण उनका खर्च जुटाते थे। (The Nobles fight, the clergy pray and The people pay.) ।

आर्थिक कारण :

विदेशी युद्ध और अपव्यय ने फ्रांस की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल कर दी थी। प्रतिवर्ष आय से अधिक व्यय होता था। इसलिए कर लगाने की प्रथा प्रचलित थी। यह कर व्यवस्था असमानता और पक्षपात के सिद्धान्त पर आधारित थी। कर निश्चित करने और वसूलने का तरीका भी समान नहीं था। प्रत्येक पाँच या छः वर्ष बाद फ्रांस की सरकार पूँजीपतियों को कर वसूलने का ठेका देती थी। ये पूँजीपति 'टैक्स-फार्मर' कहे जाते थे। ये रैयतों से अधिक से अधिक टैक्स वसूलते थे, और सरकार को निश्चित रकम देने के बाद बाकी रकम को अपने जेब में रख लेते थे। इस तरह बेचारे किसान अत्यधिक आर्थिक कष्ट का सामना कर रहे थे।

आर्थिक कारण :

1. असमान कर प्रणाली।
2. भूमिकर, धार्मिक कर एवं अन्य सामन्ती कर का बोझ।
3. बेरोजगारी की समस्या।
4. गिल्ड की पाबन्दी, प्रान्तीय आयात कर। एवं सामन्ती आयात कर से व्यापारियों में असंतोष।

फ्रांस के लोगों में आर्थिक असंतोष ने देश को क्रांति के कगार पर पहुँचा दिया। राजकोष के घाटे के भरपाई के लिए उनपर तरह-तरह के कर लगाए गए थे। किसानों को भूमि कर -'टैले' (Taille) चुकाना पड़ता था। इसके अलावे 'टीथे' (Tithe) नामक धार्मिक कर भी इन्हें चर्च को देना पड़ता था। अनेक तरह के अप्रत्यक्ष कर नमक और तम्बाकू जैसी दैनिक उपभोग की वस्तुओं पर भी देना पड़ता था। साथ ही कई भेंट, टोल टैक्स, नजराने आदि भी सामन्ती कर के रूप में उन्हें देना पड़ता था। इस तरह फ्रांस की आम जनता की आर्थिक स्थिति दिन-व दिन दयनीय होती जा रही थी।

करों के आर्थिक बोझ के अलावे फ्रांस की आर्थिक स्थिति को दयनीय बनाने में वहाँ के समाज में व्याप्त बेकारी की समस्या ने भी अहम् भूमिका अदा की। उस समय औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी और देश में मशीनों का प्रयोग आरम्भ हो चुका था। इसकी वजह से हाथ से काम करने वाले कारीगर और मजदूर घरेलू उद्योग-धन्धे विनष्ट हो जाने से बेरोजगार हो गए थे। इन्होंने क्रांति के समय राजा के खिलाफ क्रांतिकारियों का साथ दिया।

इसके अलावे अव्यवस्थित शासन व्यवस्था ने फ्रांस के व्यापारिक जीवन को भी पंगु बना दिया था। फ्रांसिसियों के जीवन में एकरूपता नहीं रहने के कारण उन्हें व्यापारिक विनिमय में कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। तरह-तरह के प्रतिबन्ध जैसे-गिल्ड की पाबन्दी, शहरों के व्यापार सम्बन्धी नियम, प्रान्तीय आयात कर, सामन्तवादी कर इत्यादि व्यापारियों पर लगाए गए थे। इन बंधनों में जकड़े रहने के कारण व्यापार का विकास लगभग रुक गया था। व्यापारी चाहते थे कि देश के व्यापार को हर तरह के बंधनों से मुक्त कर दिया जाय।

इस तरह असंतोषजनक एवं अन्यायपूर्ण वातावरण में देश का विकास अवरुद्ध होने के साथ-साथ सरकारी फिजुलखर्ची, जो लुई-XVI एवं मेरी अन्तोयनेत अपने ऐश-आराम एवं भोग-विलास की वस्तुओं पर करते थे, ने राजकोष को प्रभावित किया। ऐसी स्थिति में सरकार मितव्ययिता से काम लेने की जगह कर्ज लेने और कर लगाने पर ज्यादा केंद्रित थी।

सैनिक कारण :

सैनिक कारण

1. नियुक्ति में असमानता
2. कम वेतन का निर्धारण
3. खराब भोजन की व्यवस्था

फ्रांस के सैनिकों में भी बहुत अधिक अंसतोष था। सैनिक के पद पर किसानों को बहाल किया जाता था। कम वेतन, कठोर अनुशासन और खराब भोजन आदि से वे रूष्ट रहते थे। सेना के निम्न पदों पर उनकी नियुक्ति होती थी, उच्च

पद कुलीनों के लिए सुरक्षित थे। आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति की वजह से फ्रांस की सेना ने भी आगे चलकर क्रांतिकारियों का साथ दिया।

व्यक्तिगत एवं धार्मिक कारण :

फ्रांस में सभी तरह की स्वतंत्रताओं का अभाव था। भाषण, लेखन, विचार की अभिव्यक्ति तथा धार्मिक स्वतंत्रता का पूर्ण अभाव था। वहाँ राजधर्म कैथोलिक धर्म था और प्रोटेस्टेंट धर्म के मानने वालों को कठोर सजा दी जाती थी। इतना ही नहीं वैयक्तिक स्वतंत्रता का भी अभाव था। राजा या उसका कोई भी आदमी किसी व्यक्ति को गिरफ्तार कर सकता था। इसके लिए फ्रांस में बिना अभियोग के गिरफ्तारी वारंट होता था, जिसको लेटर्स-द-कैचेट (Letters-de-cachet) कहते थे।

व्यक्तिगत एवं धार्मिक कारण :

1. भाषण, लेखन और विचार की स्वतंत्रता का अभाव।
2. धार्मिक स्वतंत्रता का अभाव।
3. बिना अभियोग के व्यक्तियों को गिरफ्तार करना।
4. कानूनों में एकरूपता का अभाव ।

फ्रांस में कानूनों में भी एकरूपता नहीं थी, देश के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 400 कानून लागू थे। किसी को भी यह जानकारी नहीं होती थी कि उसके मुकदमें का फैसला किस कानून के तहत होगा।

बौद्धिक कारण :



मांटेस्क्यू



वाल्टेयर

फ्रांसीसी क्रांति के विषय में यह कहा जाता है कि यह एक मध्यवर्गीय क्रांति थी, जिसमें शिक्षित वर्ग के लोगों ने तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दोषों को पर्दाफाश किया और जनमानस में आक्रोश पैदा किया। फ्रांसीसी बुद्धिजीवियों ने फ्रांस में बौद्धिक आन्दोलन का सूत्रपात किया। इनमें प्रमुख मांटेस्क्यू (Montesquiey), वाल्टेयर (Voltair) और रूसो (Rouseau) थे। मांटेस्क्यू ने अपनी पुस्तक 'विधि की आत्मा' (The Sprit of Laws) में सरकार के तीन अंगों कार्यपालिका,

विधायिका और न्यायपालिका को अलग-अलग रखने के विषय में बताकर शक्ति पृथक्करण सिद्धान्त का पोषण किया। वाल्टेयर ने चर्च, समाज और राजतंत्र के दोषों का पर्दाफाश किया यद्यपि वह जनतंत्र का पक्षधर नहीं था, तथापि राजतंत्र प्रजाहित में होना चाहिए, इसका प्रबल समर्थक था। मांटेस्क्यू और वाल्टेयर सुधार चाहते थे। परन्तु रूसो पूर्ण परिवर्त्तन चाहता था। उसने अपने प्रसिद्ध पुस्तक 'सामाजिक संविदा' (Social Contract) में राज्य को व्यक्ति द्वारा निर्मित संस्था, और सामान्य इच्छा (General will) को संप्रभु माना है। अतः वह जनतंत्र का समर्थक था। दिदरो के 'वृहत ज्ञानकोष' (Encyclopaedia) के लेखों ने फ्रांस में क्रांतिकारी विचारों का प्रचार किया। फ्रांस में क्वेजनो (Quesney) एवं तुर्गो (Turgot) जैसे अर्थशास्त्रियों ने समाज में आर्थिक शोषण एवं आर्थिक नियंत्रण की आलोचना करते हुए मुक्त व्यापार (Laissezfaire) का समर्थन किया।



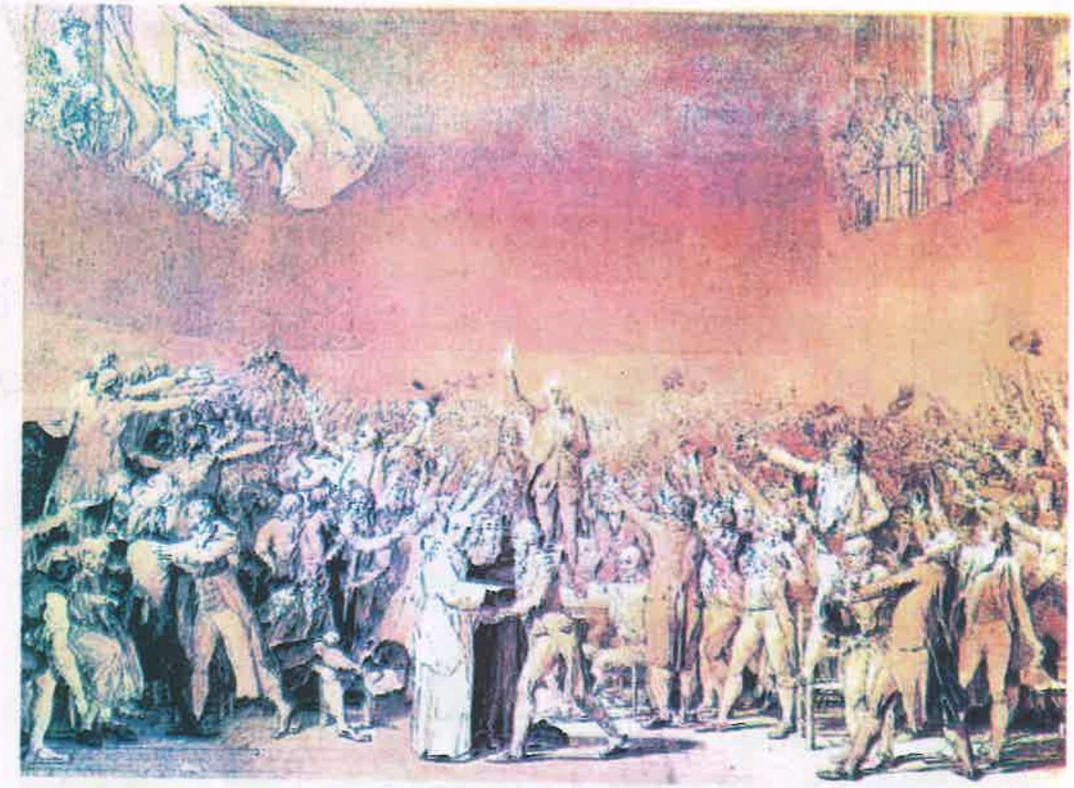
रूसो

विदेशी घटनाओं का प्रभाव :

इंगलैंड की गौरवपूर्ण क्रांति– सन् 1688 ई० की इंगलैंड की महान् क्रांति (Glorious Revolution) एवं उसके द्वारा वैधानिक शासन की स्थापना ने फ्रांस में भी राजनैतिक परिवर्त्तन का मार्ग प्रशस्त किया।

विदेशी घटनाओं का प्रभाव
1. इंगलैंड की गौरवपूर्ण क्रांति
2. अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम

अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम– अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम में लफायते के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने इंगलैंड के विरुद्ध भाग लिया था, जिसमे वहाँ गणतांत्रिक शासन की स्थापना हुई थी। फ्रांस की जनता के लिए यह प्रेरणा स्रोत का कार्य किया। इससे एक और भी तरह से क्रांति को बल मिला। इसमें अत्यधिक धन व्यय ने फ्रांस की आर्थिक स्थिति को इतना दयनीय बना दिया कि उसे सम्भालना देश के लिए असम्भव बन गया, और अन्त में यह फ्रांस की क्रांति का तात्कालिक कारण बन गया।

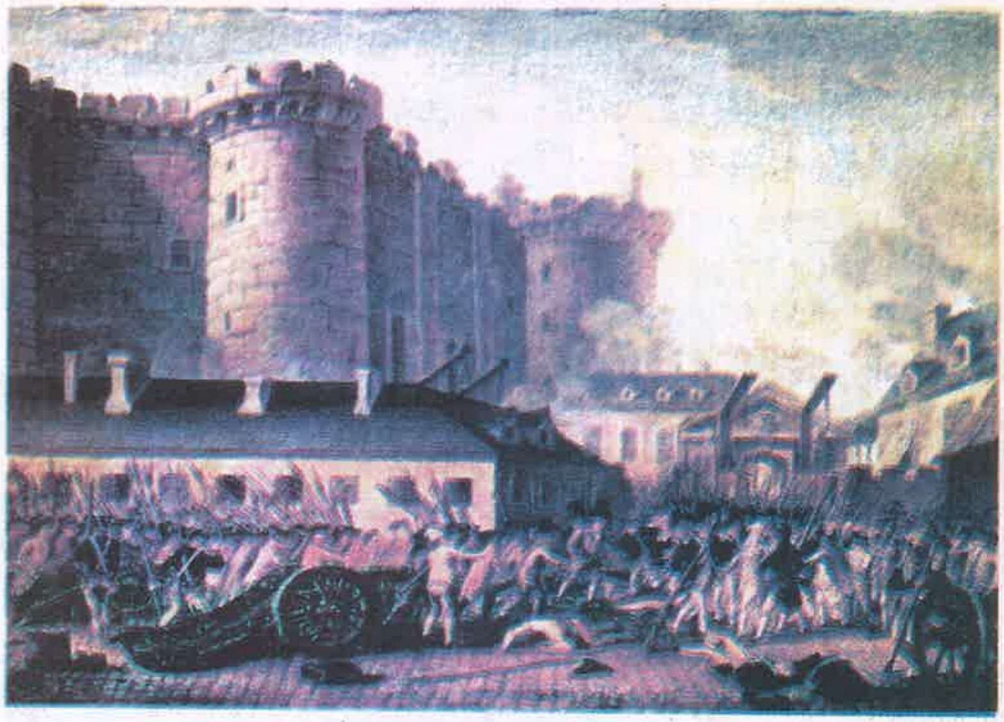


टेनिस कोर्ट शपथ

3.2 क्रांति का घटना क्रम :

सन् 1789 ई० में लुई XVI को धन की आवश्यकता हुई। इसके लिए 5 मई सन् 1789 ई० को उसने स्टेट्स जेनरल की बैठक बुलाई। इसमें प्रथम एवं द्वितीय स्टेट्स के क्रमशः 300-300 प्रतिनिधि एवं तृतीय स्टेट्स के 600 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तृतीय स्टेट्स ने लोकतांत्रिक सिद्धान्त को आधार बनाकर सभी प्रतिनिधियों के लिए मत देने का अधिकार मांगा। यह राजा द्वारा अस्वीकृत हो गया। तभी तीसरे स्टेट्स के सभी प्रतिनिधि विरोध जताते हुए बाहर निकल गए। 20 जून को जब वे अधिवेशन करने के लिए एकत्रित हुए तब उन्होंने देखा कि जिस हॉल में उनका अधिवेशन होने वाला था, वहाँ शाही अंगरक्षकों का पहरा था। अतः सभी तृतीय स्टेट्स के प्रतिनिधि टेनिस कोर्ट में एकत्रित हुए। इन्होंने अपनी सभा को नेशनल एसेम्बली (National Assembly) घोषित किया तथा यह शपथ ली कि राजा की शक्तियों को कम करने वाला संविधान जब तक बनकर तैयार नहीं हो जाता, यह सभा भंग नहीं होगी।

राजा द्वारा इसे भंगकर सदस्यों को बंदी बनाने की अफवाह उठी, तभी बहुत बड़ी संख्या में लोग वहाँ इकट्ठे हुए। उनलोगों का नेतृत्व मिराब्यो एवं ओबेसियो जैसे नेता कर रहे थे। यद्यपि मिराब्यो सामन्त परिवार का था, फिर भी वह सामन्तों के विशेषाधिकारों को समाप्त करने का पक्षधर था।



बैस्टिल का पतन

14 जुलाई सन् 1789 को क्रांतिकारियों ने पेरिस स्थित राज्य के कारागृह बैस्टिल (Bastille) को घेर लिया। बैस्टिल का दुर्ग राजतंत्र के निरंकुशता का प्रतीक था। चार घंटे डेरा डालने के बाद वे जेल का फाटक तोड़ने एवं बन्दियों को मुक्त कराने में सफल हुए। बैस्टिल कारागृह की समाप्ति निरंकुश शासन के पतन का प्रतीक था। फ्रांस में 14 जुलाई ही स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

14 जुलाई सन् 1789 के बाद लुई XVI नाम मात्र के लिए राजा बना रहा और नेशनल एसेम्बली देश के लिए अधिनियम बनाने लगी। इसी सभा ने 27 अगस्त 1789 को 'मानव और नागरिकों के अधिकार' (The Declaration of the rights of Man and citizen) को स्वीकार किया । इस घोषणा से प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार प्रकट करने और अपनी इच्छानुसार धर्मपालन करने



मानव और नागरिकों के अधिकार

के अधिकार को मान्यता मिली। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ प्रेस एवं भाषण की स्वतंत्रता भी मानी गयी । अब राज्य किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाये गिरफ्तार नहीं कर सकता था, तथा मुआवजा दिए बिना उसके जमीन पर कब्जा नहीं कर सकता था । मध्यम वर्ग के लिए सबसे महत्वपूर्ण निश्चय वे थे, जिनके अनुसार कर का भार सभी वर्गों पर समान रूप से डालने का निश्चय किया गया, और सभी को निजी सम्पत्ति रखने का अधिकार दिया गया । फ्रांस के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे यूरोप के लिए यह क्रांतिकारी घोषणा अत्यधिक महत्वपूर्ण थी।

सन् 1791 ई० में नेशनल एसेम्बली ने संविधान का प्रारूप तैयार कर लिया, जिसमें शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त को अपनाया गया। इस तरह फ्रांस में संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हुई।

यद्यपि लुई XVI ने नये संविधान को मान लिया, परन्तु मिराव्यो की मृत्यु के पश्चात् देश में हिंसात्मक विद्रोह की शुरूआत हो गयी। विदेशों में भी कुलीन वर्गों के द्वारा संविधान का विरोध किया गया । अप्रैल 1792 में नेशनल एसेम्बली आस्ट्रिया, प्रशा तथा सेवाय के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी । क्रांतिकारी युद्धों से जनता को काफी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी । उस समय सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार नहीं मिला था । नेशनल एसेम्बली का चुनाव भी अप्रत्यक्ष रूप से किया जाना था । उपरोक्त बातें आलोचना का विषय बन गया था । आलोचकों में प्रमुख जैकोबिन क्लब के सदस्य थे, जिसमें छोटे दुकानदार, कारीगर, घड़ीसाज, नौकर एवं दिहाड़ी मजदूर आदि शामिल थे । जैकोबिन क्लब पेरिस के भूतपूर्व कान्वेंट ऑफ सेंट जेकब के नाम पर रखा गया था, जिसका नेता मैक्समिलियन रॉब्सपियर था ।

3.3. आतंक का राज्य :

रॉब्सपियर वामपंथी विचारधारा का समर्थक था । अत: खाद्य पदार्थों की महँगाई एवं अभाव से नाराज होकर उसने हिंसक विद्रोह की शुरूआत की, और आतंक का राज्य स्थापित किया । चौद्दह महीनों में लगभग सतरह हजार व्यक्तियों पर मुकदमें चलाये गए और उन्हें फाँसी दे दी गयी। रॉब्सपियर प्रत्यक्ष प्रजातंत्र का पोषक था। 21 वर्ष से अधिक उम्र वालों को मतदान का अधिकार देकर, चाहे उनेक पास सम्पत्ति हो या न हो, चुनाव कराया गया । 21 सितम्बर 1792 को नव निर्वाचित एसेम्बली को कन्वेंशन नाम दिया गया तथा राजा की सत्ता को समाप्त कर दिया गया । देश द्रोह के अपराध में लुई XVI पर मुकदमा चलाया गया और 21 जनवरी 1793 को उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया । बाद में मेरी अन्तोयनेत को भी फाँसी दे दी गयी ।

रॉब्सपियर द्वारा स्थापित आंतक का राज्य अक्टूबर 1793 में उत्कर्ष पर था । कन्वेंशन द्वारा राष्ट्र की एकमात्र भाषा फ्रेंच घोषित की गयी । कानूनों का संकलन कराया गया, उपनिवेशों में गुलाम बनाकर भेजने की प्रथा समाप्त की गयी, प्रथम पुत्र को ही उत्तराधिकार बनाने की प्रथा को समाप्त किया गया । राष्ट्र का नया कलेण्डर (22 सितम्बर 1792) लागू किया गया । इन सभी को रॉब्सपियर ने सर्वोच्च सत्ता की प्रतिष्ठा के रूप में स्थापित किया । परन्तु ये अस्थाई सिद्ध हुए । उसकी हिंसात्मक कार्रवाइयों की वजह से विशेष न्यायालय ने जुलाई 1794 में उसे मृत्युदंड दिया । उसके बाद सन् 1795 ई० में नया संविधान बनाया गया, जिसने फ्रांस में गणतांत्रिक शासन की शुरूआत की। आगे चलकर नेपोलियन बोनापार्ट ने स्वयं को इस गणराज्य का प्रधान घोषित कर अपनी विधि संहिता लागू किया। उसके सुधार कार्यों ने तत्कालीन फ्रांस के उत्थान में काफी सहयोग प्रदान किया।

3.4 क्रांति के परिणाम :

पुरातन व्यवस्था का अन्त : फ्रांस की क्रांति ने वहाँ की पुरातन व्यवस्था (Anceient Regime) को समाप्त कर आधुनिक युग को जन्म दिया, जिसमें 'स्वतंत्रता', 'समानता' तथा 'बन्धुत्व' (Liberty, Equality and Fraternity) को प्रोत्साहन मिला। सामन्तवाद का अंत हो गया।

धर्मनिरपेक्ष राज्य : इस क्रांति ने राज्य को धर्म से अलग कर धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना की। धार्मिक क्षेत्र में बुद्धिवाद का उदय हुआ और जनता को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की गयी।

परिणाम

1. पुरातन व्यवस्था का अंत
2. धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना
3. जनतंत्र की स्थापना
4. व्यक्ति की महत्ता की स्वीकृति
5. समाजवाद का प्रारम्भ
6. वाणिज्य व्यापार में वृद्धि
7. दास प्रथा का उन्मूलन
8. सरकार पर शिक्षा का उत्तरदायित्व
9. राष्ट्रीय कलेंडर की शुरूआत
10. महिला आन्दोलन

जनतंत्र की स्थापना : फ्रांस की क्रांति ने राजा के दैवी अधिकार के सिद्धान्त को समाप्त किया और जनतंत्र की स्थापना की।

व्यक्ति की महत्ता : फ्रांस के नेशनल एसेम्बली ने पहली बार व्यक्ति के महत्ता पर बल दिया। नागरिकों के मौलिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की घोषणा की गयी।

समाजवाद का प्रारम्भ : फ्रांस की क्रांति ने समाजवादी प्रवृत्तियों को भी बल दिया। जैकोबिन्स ने सामान्य जनता के अधिकारों की रक्षा की एवं अमीरों की जगह गरीबों का पक्ष लिया। उनके राजनैतिक अधिकारों की घोषणा भी की गयी।

वाणिज्य व्यापार में वृद्धि : क्रांति के फलस्वरूप गिल्ड प्रथा, प्रान्तीय आयात कर तथा अन्य व्यापारिक प्रतिबन्ध व्यापारियों पर से हटा दिए गए, जिससे वाणिज्य एवं व्यापार का विकास हुआ। यही कारण था कि उन्नीसवीं शताब्दी में व्यापार के क्षेत्र में फ्रांस इंगलैंड के बाद द्वितीय स्थान पर था।

दास प्रथा का उन्मूलन : इस क्रांति ने फ्रांस में दास प्रथा का उन्मूलन किया। सन् 1794 में कन्वेंशन ने "दास मुक्ति कानून" पारित किया। यद्यपि आगे चलकर इसे नेपोलियन के द्वारा समाप्त कर दिया गया था। सन् 1848 ई० में अंतिम रूप से फ्रांसीसी उपनिवेशों से दास प्रथा का उन्मूलन किया गया।

सरकार पर शिक्षा का उत्तरदायित्व : फ्रांस में अभी तक चर्च में शिक्षा का प्रबन्ध था। अब इसकी जिम्मेवारी सरकार पर आ गयी। परिणामस्वरूप पेरिस विश्वविद्यालय तथा कई शिक्षण संस्थान एवं शोध संस्थान फ्रांस में खोले गए।

राष्ट्रीय कलेंडर : फ्रांस में एक नया राष्ट्रीय कलेंडर लागू किया गया, जिसको ऋतुओं के आधार पर बारह महीनों में बाँटा गया और उनका नया नाम ब्रुमेयर, थर्मिडार आदि रखा गया।

महिला आन्दोलन : फ्रांस के समाज में परिवर्त्तन लाने के उद्देश्य से फ्रांस की क्रांति में महिलाएँ भी शामिल हुयीं थीं। इन्होंने "द सोसायटी ऑफ रिवलूशनरी एण्ड रिपब्लिकन वीमेन' नामक संस्था का गठन किया, जिसमें ओलम्प दे गूज नामक नेत्री की अहम् भूमिका थी। इनके नेतृत्व में महिलाओं को पुरुषों के समान राजनैतिक अधिकार की मांग को स्वीकार कर लिया गया,

परन्तु राजनैतिक अधिकार शुरू में उन्हें नहीं मिल पाये। फ्रांस की क्रांति ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सजगता का पाठ पढ़ाया, जिसके कारण आगे चलकर वर्षों तक महिला आन्दोलन चलता रहा। परिणामस्वरूप सन् 1946 ई० में फ्रांस की महिलाओं ने मताधिकार प्राप्त करने में सफलता हासिल किया।

3.5 अन्य देशों पर क्रांति का प्रभाव :

फ्रांस की क्रांति का प्रभाव सिर्फ फ्रांस पर ही नहीं बल्कि यूरोप के अन्य देशों पर भी पड़ा। नेपोलियन फ्रांस में सुधार के कार्यों को करते हुए अपने विजय अभियान के दौरान जब इटली और जर्मनी आदि देशों में पहुँचा, तब उसे वहाँ की जनता भी 'क्रांति का अग्रदूत' कहकर स्वागत किया। उसने इन देशों के नागरिकों को राष्ट्रीयता का संदेश देने का कार्य किया।

अन्य देशों पर प्रभाव
1. इटली पर प्रभाव
2. जर्मनी पर प्रभाव
3. पोलैंड पर प्रभाव
4. इंगलैंड पर प्रभाव

इटली पर प्रभाव : इटली इस समय कई भागों में बँटा हुआ था। फ्रांस की इस क्रांति के बाद इटली के विभिन्न भागों में नेपोलियन ने अपनी सेना एकत्रित कर लड़ाई की तैयारी की और 'इटली राज्य' स्थापित किया। एक साथ मिलकर युद्ध करने से उनमें राष्ट्रीयता की भावना आई और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

जर्मनी पर प्रभाव : जर्मनी भी उस समय छोटे-छोटे 300 राज्यों में विभक्त था, जो नेपोलियन के प्रयास से 38 राज्यों में सीमित हो गया। इस क्रांति के 'स्वतंत्रता', 'समानता' एवं 'बन्धुत्व' की भावना को जर्मनी के लोगों ने अपनाया और आगे चलकर इससे जर्मनी के एकीकरण को बल मिला।

पोलैंड पर प्रभाव : फ्रांसीसी क्रांति के अग्रदूत नेपोलियन ने पोलैंड में स्वतंत्रता की लहर फूँकी। पहले यह रूस, प्रशा और आस्ट्रिया के बीच बँटा हुआ था। यद्यपि, पोलैंड को शीघ्र आजादी नहीं मिली, लेकिन उनमें राष्ट्रीयता का संचार इसी क्रांति ने किया। एक लम्बी अवधि के प्रयास के फलस्वरूप प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पोलैंड का स्वतंत्र राज्य कायम हो सका।

इंगलैंड पर प्रभाव : नेपोलियन का विजय अभियान इंगलैंड पर भी हुआ, जबकि इंगलैंड की आगे चलकर उसके पतन का कारण बना। फिर भी इस क्रांति का इतना अधिक असर इंगलैंड में दिखा ही वहाँ की जनता ने भी सामन्तवाद के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी। फलस्वरूप, सन् 1832 ई० में इंगलैंड में 'संसदीय सुधार अधिनियम' पारित हुआ, जिसके द्वारा वहाँ के जमींदारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी और जनता के लिए अनेक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हुआ। भविष्य में, इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति के विकास में इस क्रांति का बहुत अधिक योगदान था।

3.6 क्रांति का स्वरूप :

फ्रांसीसी क्रांति के स्वरूप के सम्बन्ध के विषय में कहा जाता है कि यह पूर्णरूप से निश्चयात्मक थी, अर्थात् क्रांति की गति और दिशा वही थी जो लगभग सभी क्रांतियों की होती है। फिर भी किसी क्रांति के स्वरूप को निश्चित करने के पहले यह देखना आवश्यक होता है कि उस क्रांति के क्या कारण थे, उस क्रांति में समाज के किस वर्ग के लोगों ने मुख्य रूप से भाग लिया और उस क्रांति से किस वर्ग के लोगों को अधिक लाभ हुआ। कई इतिहासकारों ने सन् 1789 ई० की फ्रांसीसी क्रांति को एक बुर्जुआई (मध्यम वर्गीय) क्रांति कहा है। उनके अनुसार इस क्रांति ने एक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की जगह दूसरे विशेषाधिकारी वर्ग का शासन स्थापित कर दिया। फ्रांस में मध्यमवर्ग के पास पूँजी की कमी नहीं थी। ये यदा कदा सरकार को कर्ज देने का काम भी करते थें, लेकिन सत्ता में इनकी कोई भी सहभागिता नहीं होती थी। यद्यपि फ्रांस की क्रांति के अनेक कारण थे, परन्तु मध्यम वर्ग के असंतोष और इसी वर्ग के द्वारा जनचेतना का जागृत करना-क्रांति को अवश्यम्भावी बना दिया। जितने भी दार्शनिक थे, जिन्होंने बौद्धिक चेतना जगाई, सभी मध्यम वर्ग के थे, क्रांति के अधिकांश नेता भी मध्यम वर्ग के थे, जिन्होंने क्रांति का संचालन किया। यह सच है कि मजदूर तथा किसानों ने मिलकर क्रांति को सफल बनाया, लेकिन उसके बाद भी सत्ता उनके हाथ में नहीं आई। 4 अगस्त 1789 को जब नेशनल एसेम्बली द्वारा सामन्तवाद की समाप्ति हुई तो उसके द्वारा अपनायी गयी आर्थिक नीतियों ने स्पष्ट कर दिया कि क्रांति पर बुर्जआ वर्ग हावी हो गया है। इस क्रांति से मध्यम वर्ग को ही लाभ हुआ, साधारण जनता को तो मताधिकार भी नहीं दिया गया। नेशनल एसेम्बली ने एक कानून बना कर मिलों में काम करने वाले मजदूरों के संगठन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। क्रांति का नारा 'स्वतंत्रता', 'समानता' एवं 'बन्धुत्व' का प्रयोग पादरियों तथा सामन्तों के विशेषाधिकारों को समाप्त करने एवं मध्यम वर्ग के लोगों के लिए विशेष सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए था। सन् 1789 ई० से 1815 तक शासन पर मध्यम वर्ग का ही अधिकार रहा। यही कारण था कि जैकोबिन दल ने 'आतंक का राज्य' स्थापित कर सर्वहारा वर्ग को राजनैतिक तथा आर्थिक अधिकार दिलाने का अस्थाई प्रयास किया था। उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए इतिहासकारों की यह बात तथ्यपरक प्रतीत होती है कि फ्रांस की क्रांति का स्वरूप मध्यवर्गीय था, क्योंकि मध्यमवर्ग के लोग ही इसके विशेष्य कारण के रूप में थे, क्रांति का नेतृत्व भी इन्होंने ही किया, और सर्वाधिक लाभ भी इसी वर्ग को प्राप्त हुआ।

निष्कर्षत:, सन् 1789 की फ्रांस की क्रांति ने फ्रांस में एक ऐसे युग का सूत्रपात किया जिसमें 'स्वतंत्रता', 'समानता' एवं 'बन्धुत्व' की नींव पड़ी तथा मानवाधिकारों की रक्षा हुई। साथ ही यूरोप के अन्य देश भी इन विचारों से प्रभावित हुए और वहाँ भी सुधारों के एक नये युग का सिलसिला शुरू हुआ।

अभ्यास :

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. फ्रांस की राजक्रांति किस ई0 में हुई?

(क) 1776 (ख) 1789

(ग) 1776 (घ) 1832

2. बैस्टिल का पतन कब हुआ?

(क) 5 मई 1789 (ख) 20 जून 1789

(ग) 14 जुलाई 1789 (घ) 27 अगस्त 1789

3. प्रथम एस्टेट में कौन आते थे?

(क) सर्वसाधारण (ख) किसान

(ग) पादरी (घ) राजा

4. द्वितीय एस्टेट में कौन आते थे?

(क) पादरी (ख) राजा

(ग) कुलीन (घ) मध्यमवर्ग

5. तृतीय एस्टेट में इनमें से कौन थे?

(क) दार्शनिक (ख) कुलीन

(ग) पादरी (घ) न्यायाधीश

6. वोल्टेयर क्या था?

(क) वैज्ञानिक (ख) गणितज्ञ

(ग) लेखक (घ) शिल्पकार

7. रूसो किस सिद्धान्त का समर्थक था?

(क) समाजवाद (ख) जनता की इच्छा (General Will)

(ग) शक्ति पृथक्करण (घ) निरंकुशता

8. मांटेस्क्यू ने कौन-सी पुस्तक लिखी?

(क) सामाजिक संविदा (ख) विधि की आत्मा

(ग) दास कैपिटल (घ) वृहत ज्ञानकोष

9. फ्रांस की राजक्रांति के समय वहाँ का राजा कौन था?

(क) नेपोलियन (ख) लुई XIV

(ग) लुई XVI (घ) मिराब्यो

10. फ्रांस में स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है?

(क) 4 जुलाई (ख) 14 जुलाई

(ग) 27 अगस्त (घ) 31 जुलाई

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. लुई XVI सन् .... ई० में फ्रांस की गद्दी पर बैठा।
2. .... लुई XVI की पत्नी थी।
3. फ्रांस की संसदीय संस्था को .... कहते थे।
4. ठेका पर टैक्स वसूलने वाले पूँजीपतियों को .... कहा जाता था।
5. .... के सिद्धान्त की स्थापना मांटेस्क्यू ने की।
6. .... की प्रसिद्ध पुस्तक 'सामाजिक संविदा' है।
7. 27 अगस्त 1789 को फ्रांस की नेशनल एसेम्बली ने .... की घोषणा थी।
8. जैकोबिन दल का प्रसिद्ध नेता .... था।
9. दास प्रथा का अंतिम रूप से उन्मूलन .... ई० में हुआ।
10. फ्रांसीसी महिलाओं को मतदान का अधिकार सन् .... ई० में मिला।

III. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. फ्रांस की क्रांति के राजनैतिक कारण क्या थे?
2. फ्रांस की क्रांति के सामाजिक कारण क्या थे?
3. क्रांति के आर्थिक कारणों पर प्रकाश डालें।
4. फ्रांस की क्रांति के बौद्धिक कारणों का उल्लेख करें।

5. 'लेटर्स-डी-कैचेट'' से आप क्या समझते हैं?
6. अमेरीका के स्वतंत्रता संग्राम का फ्रांस की क्रांति पर क्या प्रभाव पड़ा?
7. 'मानव एवं नागरिकों के अधिकार से' आप क्या समझते हैं?
8. फ्रांस की क्रांति का इंग्लैंड पर क्या प्रभाव पड़ा?
9. फ्रांस की क्रांति ने इटली को प्रभावित किया, कैसे?
10. फ्रांस की क्रांति से जर्मनी कैसे प्रभावित हुआ?

IV. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. फ्रांस की क्रांति के क्या कारण थे?
2. फ्रांस की क्रांति के परिणामों का उल्लेख करें।
3. फ्रांस की क्रांति एक मध्यमवर्गीय क्रांति थी, कैसे?
4. फ्रांस की क्रांति में वहाँ के दार्शनिकों का क्या योगदान था?
5. फ्रांस की क्रांति की देनों का उल्लेख करें।
6. फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को किस तरह प्रभावित किया।
7. 'फ्रांस की क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी' इस कथन की पुष्टि करें।
8. फ्रांस की क्रांति के लिए लुई XVI किस तरह उत्तरदायी था?
9. फ्रांस की क्रांति में जैकोबिन दल की क्या भूमिका थी ?
10. नेशनल एसेम्बली और नेशनल कन्वेंशन ने फ्रांस के लिए कौन-कौन से सुधार पारित किए।